FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 1 of 9

कक्षा 12 · संस्कृतम् केन्द्रिकम् (322) · भास्वती द्वितीयो भागः

पञ्चमः पाठः
सूक्ति-सौरभम्

प्राचीनाः अर्वाचीनाः च कवयः · भर्तृहरिः, चाणक्यः, विष्णुशर्मा, विल्हणः, मङ्गलदेवशास्त्री... · 12 सूक्तयः

पाठ-परिचयः

सूक्तयः लघुकलेवराः अपि भावगाम्भीर्ययुक्ताः भवन्ति; ताः समाजस्य मनीषिणां शताब्दीनाम् अनुभवं प्रकटयन्ति। अस्मिन् पाठे **भर्तृहरेः, चाणक्यस्य, विष्णुशर्मणः, विल्हणस्य** इत्यादीनां प्राचीनानां, **मङ्गलदेवशास्त्रिणः, भट्टरामनाथशास्त्रिणः** इत्यादीनाम् अर्वाचीनानां कवीनां च द्वादश सूक्तयः सङ्गृहीताः। विषयाः: मौनम्, विद्या, दुर्जनस्वभावः, लक्ष्म्याः निवासः, परिश्रमः, सुपुत्रः, गुणज्ञता, जलसेवनम्, शास्त्रम्, अल्पज्ञ-विदुषोः भेदः।

> **★ परीक्षा-सुझाव: हिंदी में सार (12 सूक्तियाँ):** (1) विद्वानों की सभा में मूर्खों का भूषण मौन है। (2) विद्वानों का असली रूप विद्या है; विद्वान् रूपवानों से अधिक सम्मान पाते हैं। (3) दुष्ट हज़ार बार सिखाने पर भी सज्जन नहीं बनता, जैसे अमृत-सागर में डूबा मन्दराचल कोमल नहीं होता। (4) दुष्ट कानों को अमृत-सी सूक्ति छोड़कर दोष ढूँढते हैं, जैसे ऊँट बगीचे में काँटे ही ढूँढता है। (5) उत्साही, कार्य में देर न करने वाले, कर्मविधि जानने वाले, व्यसनों से दूर, शूर, कृतज्ञ और पक्के मित्र के पास लक्ष्मी स्वयं रहने आती है। (6) लम्बे प्रयास से बनी वस्तु क्षण भर में नष्ट हो जाती है (घड़ा बनाने में वर्ष, तोड़ने में मुहूर्त)। (7) थककर भी बार-बार कर्म आरम्भ करो, लक्ष्मी कर्मठ की सेवा करती है। (8) एक भी विद्वान् सज्जन सुपुत्र से पूरा कुल आनन्दित होता है, जैसे चन्द्रमा से रात। (9) गुणी ही गुण जानता है, बली ही बल। (10) जल: अजीर्ण में औषधि, पचने पर बलदायक, भोजन के बीच अमृत। (11) शास्त्र सबका नेत्र है; जिसके पास नहीं, वह अन्धा है। (12) अल्पज्ञ बहुत बोलता है, विद्वान् कम; काँसा बहुत बजता है, सोना नहीं।

बोर्ड में इस पाठ से (2024–2026)

वर्ष	प्रश्न	अंक
2026	Q11 पद्यांश (सूक्ति 12: अल्पज्ञ एव...); Q13(क) भावार्थ (सूक्ति 8: एकेनापि सुपुत्रेण); Q13(ख) 'भोजने चामृतं वारि...'; Q15 पिको वसन्तस्य...; Q7 शिक्ष्यमाणः	5 + 3 + 1 + 1 + 1
2025	Q10 पद्यांश (सूक्ति 4: कर्णामृतं...); Q15 लोचनम् (नेत्रम्)	5 + ½
2024	Q10 पद्यांश (सूक्ति 9: गुणी गुणं वेत्ति...); Q14 'विशेषतः सर्वविदां समाजे'	5 + ½

> **परीक्षा-दृष्टि से महत्त्वपूर्ण ★★★:** हर वर्ष इसी पाठ से पद्यांश! सूक्ति 4, 8, 9, 10, 12 सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण।
> ➤ क्रमेलकः = उष्ट्रः; करी = गजः; पिकः = कोकिलः; वायसः = काकः; शर्वरी = रात्रिः; कुलालः = कुम्भकारः; वारि = जलम्; भेषजम् = औषधम्; अजस्रम् = निरन्तरम्; वेत्ति = जानाति
> ➤ प्रत्यय: विमुच्य, प्रविश्य (ल्यप्); भेत्तुम्, कर्तुम् (तुमुन्); कृतम् (क्त); शिक्ष्यमाणः (शानच्); रूपवताम्, विद्यावताम् (मतुप्)

5.1 सूक्तयः, अन्वयः, अनुवादः ★★★

1. (भर्तृहरिः) स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः।
विशेषतः सर्वविदां समाजे विभूषणं मौनमपण्डितानाम्॥

> **अन्वयः:** विधात्रा अज्ञतायाः स्वायत्तम् एकान्तगुणं छादनं (मौनं) विनिर्मितम्। विशेषतः सर्वविदां समाजे अपण्डितानां मौनं विभूषणम् (अस्ति)।
> **अनुवादः** विधाता ने अज्ञान को ढकने के लिए स्वाधीन (अपने वश का) और पूर्णतः गुणकारी आवरण (मौन) बनाया है। विशेष रूप से सर्वज्ञ (विद्वानों) की सभा में मूर्खों का भूषण मौन ही है।

2. (मङ्गलदेवशास्त्री) रूपं प्रसिद्धं न बुधास्तदाहुर्विद्यावतां वस्तुत एव रूपम्।
अपेक्षया रूपवतां हि विद्या मानं लभन्तेऽतितरां जगत्याम्॥

> **अन्वयः:** बुधाः प्रसिद्धं रूपं तत् (वास्तविकं रूपं) न आहुः; वस्तुतः विद्यावताम् (विद्या) एव रूपम्। हि रूपवताम् अपेक्षया विद्यावन्तः जगत्याम् अतितरां मानं लभन्ते।
> **अनुवादः** विद्वान् लोग प्रसिद्ध (बाहरी) रूप को (वास्तविक) रूप नहीं कहते; वस्तुतः विद्वानों की विद्या ही उनका रूप है। रूपवानों की अपेक्षा विद्वान् संसार में अधिक सम्मान पाते हैं।

3. (भट्टरामनाथशास्त्री) न दुर्जनः सज्जनतामुपैति शठः सहस्रैरपि शिक्ष्यमाणः।
चिरं निमग्नोऽपि सुधासमुद्रे न मन्दरो मार्दवमभ्युपैति॥

> **अन्वयः:** सहस्रैः अपि शिक्ष्यमाणः शठः दुर्जनः सज्जनतां न उपैति। (यथा) सुधासमुद्रे चिरं निमग्नः अपि मन्दरः मार्दवं न अभ्युपैति।
> **अनुवादः** हज़ारों (उपायों) से सिखाया जाता हुआ भी धूर्त दुर्जन सज्जनता को प्राप्त नहीं होता; जैसे अमृत के सागर में बहुत समय तक डूबा रहकर भी मन्दराचल पर्वत कोमलता को प्राप्त नहीं होता।

4. ★★★ (विल्हणः) कर्णामृतं सूक्तिरसं विमुच्य दोषेषु यत्नः सुमहान् खलानाम्।
निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य क्रमेलकः कण्टकजालमेव॥

> **अन्वयः:** खलानां कर्णामृतं सूक्तिरसं विमुच्य दोषेषु (एव) सुमहान् यत्नः (भवति)। (यथा) क्रमेलकः केलिवनं प्रविश्य कण्टकजालम् एव निरीक्षते।
> **अनुवादः** दुष्टों का कानों के लिए अमृत-समान सूक्तियों का रस छोड़कर दोषों (को ढूँढने) में ही बड़ा प्रयत्न होता है; जैसे ऊँट क्रीडा-उद्यान में घुसकर (फूल-फल छोड़) काँटों का समूह ही देखता है।

5. (विष्णुशर्मा) उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रं क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम्।
शूरं कृतज्ञं दृढसौहृदञ्च लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः॥

> **अन्वयः:** उत्साहसम्पन्नम्, अदीर्घसूत्रम्, क्रियाविधिज्ञम्, व्यसनेषु असक्तम्, शूरम्, कृतज्ञं, दृढसौहृदं च (पुरुषं) लक्ष्मीः निवासहेतोः स्वयं याति।
> **अनुवादः** उत्साह से युक्त, कार्य में देरी न करने वाले, कार्य की विधि जानने वाले, व्यसनों में आसक्त न रहने वाले, शूरवीर, कृतज्ञ और पक्की मित्रता वाले (व्यक्ति) के पास लक्ष्मी निवास के लिए स्वयं जाती है।

6. (सूक्तिमुक्तावली) दीर्घप्रयासेन कृतं हि वस्तु निमेषमात्रेण भजेद् विनाशम्।
कर्तुं कुलालस्य तु वर्षमेकं भेत्तुं हि दण्डस्य मुहूर्तमात्रम्॥

> **अन्वयः:** दीर्घप्रयासेन कृतं वस्तु हि निमेषमात्रेण विनाशं भजेत्। कुलालस्य (घटं) कर्तुं तु एकं वर्षं (लगति), (तं) भेत्तुं हि दण्डस्य मुहूर्तमात्रम्।
> **अनुवादः** लम्बे परिश्रम से बनाई गई वस्तु पल भर में नष्ट हो सकती है। कुम्हार को (घड़ा) बनाने में एक वर्ष (लगता है), पर डण्डे को उसे तोड़ने में क्षण भर।

> ★ **परीक्षा-सुझाव: सूक्ति 3 का दृष्टान्त:** समुद्र-मन्थन में मन्दराचल को मथानी बनाया गया था; अमृत-सागर में डूबकर भी वह पत्थर ही रहा।

SAMPLE · notesbazar.in

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 3 of 9

7. (कस्यचित्) आरभेत हि कर्माणि श्रान्तः श्रान्तः पुनः पुनः।
कर्माण्यारभमाणं हि पुरुषं श्रीर्निषेवते॥

अन्वयः: श्रान्तः श्रान्तः (अपि) पुनः पुनः कर्माणि आरभेत हि। कर्माणि आरभमाणं पुरुषं हि श्रीः निषेवते।
अनुवाद: थक-थककर भी बार-बार कर्मों को आरम्भ करना चाहिए; क्योंकि कर्म आरम्भ करने वाले पुरुष की लक्ष्मी सेवा करती है।

8. ★★★ (चाणक्यनीतिः) एकेनापि सुपुत्रेण विद्यायुक्तेन साधुना।
आह्लादितं कुलं सर्वं यथा चन्द्रेण शर्वरी॥

अन्वयः: यथा चन्द्रेण शर्वरी (आह्लादिता भवति), (तथा) विद्यायुक्तेन साधुना एकेन अपि सुपुत्रेण सर्वं कुलम् आह्लादितम् (भवति)।
अनुवाद: विद्या से युक्त सज्जन एक भी सुपुत्र से सारा कुल आनन्दित हो जाता है, जैसे (एक) चन्द्रमा से रात।
भावार्थ (CBSE 2026): एकेन अपि **सुपुत्रेण** विद्यासहितेन **सज्जनेन** च सम्पूर्णः वंशः तथैव प्रसन्नः भवति, यथा **चन्द्रेण** रात्रिः प्रसन्ना भवति।

9. ★★★ (चाणक्यनीतिः) गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणो बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः।
पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः करी च सिंहस्य बलं न मूषकः॥

अन्वयः: गुणी गुणं वेत्ति, निर्गुणः न वेत्ति। बली बलं वेत्ति, निर्बलः न वेत्ति। पिकः वसन्तस्य गुणं (वेत्ति), वायसः न; करी च सिंहस्य बलं (वेत्ति), मूषकः न।
अनुवाद: गुणवान् ही गुण को जानता है, गुणहीन नहीं; बलवान् ही बल को जानता है, निर्बल नहीं। कोयल वसन्त के गुण को जानती है, कौआ नहीं; हाथी सिंह के बल को जानता है, चूहा नहीं।

10. ★★ (वैद्यकीयसुभाषितसङ्ग्रहः) अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम्।
भोजने चामृतं वारि भोजनान्ते विषापहम्॥

अन्वयः: अजीर्णे वारि भेषजम्, जीर्णे वारि बलप्रदम्, भोजने च वारि अमृतम्, भोजनान्ते (वारि) विषापहम्।
अनुवाद: अपच होने पर जल औषधि है, (भोजन) पच जाने पर जल बल देने वाला है, भोजन के बीच में जल अमृत है।
पाठभेद: पुस्तक में 'भोजनान्ते विषापहम्' छपा है; प्रचलित पाठ और CBSE 2026 में 'भोजनान्ते **विषप्रदम्**': भोजन के अन्त में (तुरन्त) जल विष-समान है। NCERT प्रश्न 'भोजनान्ते किं विषम्?' भी इसी अर्थ पर आधारित है: उत्तर **वारि**।

11. (हितोपदेशः) अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्।
सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः॥

अन्वयः: अनेकसंशयोच्छेदि, परोक्षार्थस्य दर्शकं शास्त्रं सर्वस्य लोचनम् (अस्ति)। यस्य (शास्त्रं) न अस्ति, सः अन्धः एव।
अनुवाद: अनेक संशयों को काटने वाला, परोक्ष (आँखों से न दिखने वाले) विषयों को दिखाने वाला शास्त्र सबका नेत्र है; जिसके पास यह नहीं, वह अन्धा ही है।

12. ★★★ (सूक्तिः) अल्पज्ञ एव पुरुषः प्रलपत्यजस्रं पाण्डित्यसम्भृतमतिस्तु मितप्रभाषी।
कांस्यं यथा हि कुरुतेऽतितरां निनादं तद्वत् सुवर्णमिह नैव करोति नादम्॥

अन्वयः: अल्पज्ञः एव पुरुषः अजस्रं प्रलपति, पाण्डित्यसम्भृतमतिः तु मितप्रभाषी (भवति)। यथा हि कांस्यम् अतितरां निनादं कुरुते, तद्वत् इह सुवर्णं नादं न एव करोति।
अनुवाद: थोड़ा जानने वाला व्यक्ति ही निरन्तर बकवास करता है, पाण्डित्य से भरी बुद्धि वाला तो कम बोलता है; जैसे काँसा बहुत अधिक आवाज़ करता है, वैसी आवाज़ यहाँ सोना नहीं करता।

सूक्ति-कर्ता (CBSE 'सन्दर्भग्रन्थ' प्रश्न): 1 भर्तृहरिः · 2 मङ्गलदेवशास्त्री · 3 भट्टरामनाथशास्त्री · 4 विल्हणः · 5 विष्णुशर्मा (पञ्चतन्त्रम्) · 6 सूक्तिमुक्तावली · 8, 9 चाणक्यनीतिः · 10 वैद्यकीयसुभाषितसङ्ग्रहः · 11 हितोपदेशः (नारायणपण्डितः)।

शब्दार्थाः ★★★

पदम्	अर्थः	पदम्	अर्थः
स्वायत्तम्	स्वाधीन	विधात्रा	ईश्वर द्वारा
छादनम्	आवरण	सर्वविदाम्	सब जानने वालों के
बुधाः	विद्वान्	आहुः	कहते हैं
जगत्याम्	संसार में	शठः	धूर्त
मार्दवम्	कोमलता	मन्दरः	मन्दराचल
विमुच्य	छोड़कर	खलानाम्	दुष्टों का
निरीक्षते	देखता है	केलिवनम्	क्रीडा-उद्यान
क्रमेलकः	ऊँट	व्यसनेषु	व्यसनों/विपत्तियों में
असक्तम्	न लगा हुआ	अदीर्घसूत्रम्	टालमटोल न करने वाला
याति	जाता है	निमेषमात्रेण	पल भर में
कुलालस्य	कुम्हार का	शर्वरी	रात
वेत्ति	जानता है	करी	हाथी
पिकः	कोयल	वायसः	कौआ
भेषजम्	औषधि	वारि	जल
प्रलपति	बकता है	अजस्रम्	निरन्तर
सम्भृतमतिः	भरी (निश्चित) बुद्धि वाला	निनादम्	आवाज़
लोचनम्	नेत्र	परोक्षार्थस्य	अदृश्य विषय का

पर्यायाः (NCERT 6) ★★★

उत्तर: स्वायत्तम् – **स्वाधीनम्** · विमुच्य – **परित्यज्य** · क्रमेलकः – **उष्ट्रः** · याति – **गच्छति** · कुलालस्य – **कुम्भकारस्य** · शर्वरी – **रात्रिः** · वेत्ति – **जानाति** · करी – **गजः** · अजस्रम् – **निरन्तरम्** · प्रलपति – **कथयति** · मुहूर्तमात्रम् – **क्षणमात्रम्**

विलोमाः (NCERT 7) ★★★

उत्तर: स्वायत्तम् – **पराधीनम्** · अज्ञतायाः – **विद्वत्तायाः** · अपण्डितानाम् – **पण्डितानाम्** · बुधाः – **मूर्खाः** · मानम् – **अपमानम्** · खलानाम् – **सज्जनानाम्** · याति – **आयाति** · कृतज्ञम् – **अकृतज्ञम्** · आशायाः – **निराशायाः** · आसक्तम् – **अनासक्तम्** · कृतम् – **अकृतम्** · जीर्णे – **अजीर्णे** · बहुभाषी – **मितप्रभाषी** (CBSE 2026) · निर्बलः – **बली** (CBSE 2024)

सन्धिविच्छेदः ★★★

पदम्	विच्छेदः
स्वायत्तमेकान्तगुणम्	स्वायत्तम् + एकान्तगुणम्
छादनमज्ञतायाः	छादनम् + अज्ञतायाः
मौनमपण्डितानाम्	मौनम् + अपण्डितानाम्
बुधास्तदाहुर्विद्यावताम्	बुधाः + तत् + आहुः + विद्यावताम्
लभन्तेऽतितराम्	लभन्ते + अतितराम् (पूर्वरूप)
सज्जनतामुपैति	सज्जनताम् + उपैति (उप + एति: वृद्धि)
सहस्रैरपि	सहस्रैः + अपि (विसर्ग → र्)

निमग्नोऽपि	निमग्नः + अपि
मार्दवमभ्युपैति	मार्दवम् + अभि + उप + एति
उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रम्	उत्साहसम्पन्नम् + अदीर्घसूत्रम्
व्यसनेष्वसक्तम्	व्यसनेषु + असक्तम् (यण्)
दृढसौहृदञ्च	दृढसौहृदम् + च (परसवर्ण)
कर्माण्यारभमाणम्	कर्माणि + आरभमाणम् (यण्)
श्रीर्निषेवते	श्रीः + निषेवते (विसर्ग → र्)
एकेनापि	एकेन + अपि (दीर्घ)
चामृतम्	च + अमृतम् (दीर्घ)
नास्त्यन्ध एव	न + अस्ति + अन्धः + एव
प्रलपत्यजस्रम्	प्रलपति + अजस्रम् (यण्)
पाण्डित्यसम्भृतमतिस्तु	...मतिः + तु (विसर्ग → स्)
कुरुतेऽतितराम्	कुरुते + अतितराम्
नैव	न + एव (वृद्धि)

प्रकृति-प्रत्ययः (NCERT 5) ★★★

पदम्	शब्दः/धातुः	प्रत्ययः	विभक्तिः
रूपवताम्	रूप	मतुप्	षष्ठी बहु.
कृतम्	कृ	क्त	प्रथमा एक.
प्रविश्य	प्र + विश्	ल्यप्	अव्ययम्
विमुच्य	वि + मुच्	ल्यप्	अव्ययम्
भेत्तुम्	भिद्	तुमुन्	अव्ययम्
कर्तुम्	कृ	तुमुन्	अव्ययम्
शिक्ष्यमाणः	शिक्ष् (कर्मणि)	शानच्	प्रथमा एक. (CBSE 2026)

NCERT अभ्यासः, पूर्णतः हलः

1. एकपदेन उत्तरत।

उत्तर: (क) कः कण्टकजालं पश्यति? **क्रमेलकः** (ख) शर्वरी केन भाति? **चन्द्रेण** (ग) कः गुणं वेत्ति? **गुणी** (घ) अजीर्णे किं भेषजम् अस्ति? **वारि** (ङ) सर्वस्य लोचनं किम् अस्ति? **शास्त्रम्** (च) कः निरन्तरं प्रलपति? **अल्पज्ञः पुरुषः**

2. पूर्णवाक्येन उत्तरत।

उत्तर: (क) केषां समाजे अपण्डितानां मौनं विभूषणम्? **सर्वविदां समाजे अपण्डितानां मौनं विभूषणम्।**
(ख) के सर्वलोकस्य दासाः सन्ति? **ये आशायाः दासाः, ते सर्वलोकस्य दासाः सन्ति।** (भर्तृहरिः 'आशाया ये दासास्ते दासाः सर्वलोकस्य')
(ग) केन कुलं विभाति? **विद्यायुक्तेन साधुना सुपुत्रेण कुलं विभाति।**
(घ) सिंहः केन विभाति? **सिंहः बलेन विभाति।**
(ङ) भोजनान्ते किं विषम्? **भोजनान्ते वारि विषम्।**

3. प्रश्ननिर्माणम्

उत्तर: (क) <u>विधात्रा</u> अज्ञतायाः छादनं विनिर्मितम्। → **केन** अज्ञतायाः छादनं विनिर्मितम्? (ख) <u>विद्यावताम्</u> विद्या एव रूपम्। → **केषाम्** विद्या एव रूपम्? (ग) लक्ष्मीः <u>शूरम्</u> प्राप्नोति। → लक्ष्मीः **कम्** प्राप्नोति? (घ) <u>बली</u> बलं वेत्ति। →

कः बलं वेत्ति? (ङ) शास्त्रं परोक्षार्थस्य दर्शकम्। → शास्त्रं **कस्य** दर्शकम्? (च) कांस्यम् अतितराम् निनादं करोति। → कांस्यं **कथम्** निनादं करोति?

4. रिक्तस्थानपूर्तिः

उत्तर: (क) एकेन अपि **विद्यायुक्तेन** साधुना सुपुत्रेण **कुलम्** सर्वम् आह्लादितं यथा **चन्द्रेण** शर्वरी।
(ख) लक्ष्मीः उत्साहसम्पन्नम् अदीर्घसूत्रं **क्रियाविधिज्ञम्** व्यसनेषु असक्तं **शूरम्** कृतज्ञं **दृढसौहृदम्** च निवासहेतोः स्वयं याति।

8. विशेषण-विशेष्य-मेलनम्

उत्तर: शूरम् – **पुरुषम्** · एकेन – **सुपुत्रेण** · अल्पज्ञः – **पुरुषः** · सर्वम् – **कुलम्** · सुमहान् – **यत्नः**

9. कः केन विभाति?

उत्तर: गुणी – **गुणेन** · शर्वरी – **चन्द्रेण** · विद्वान् – **विद्यया** · सिंहः – **बलेन** · कुलम् – **सुपुत्रेण**

10. पदानि संयोज्य वाक्यरचना

उत्तर: (1) **विधात्रा छादनं विनिर्मितम्।** (2) **सर्वविदां (समाजे) मौनं भूषणम् अस्ति।** (3) **लक्ष्मीः शूरं (याति)।** (4) **शर्वरी चन्द्रेण भाति।** (5) **क्रमेलकः कण्टकजालम् एव पश्यति।** (6) **गुणी गुणेन विभाति।** (7) **कुलं सुपुत्रेण शोभते।**

योग्यताविस्तर (भावविस्तर)

उत्तर: (1) **वसामि नित्यं सुभगे प्रगल्भे...**: लक्ष्मी कहती हैं, मैं भाग्यशाली, साहसी, दक्ष, कर्मरत, अक्रोधी, ईश्वरभक्त, कृतज्ञ, जितेन्द्रिय और सदा उत्साही में रहती हूँ (सूक्ति 5 से तुलना)।
(2) **वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि। एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणोऽपि च॥**: एक गुणी पुत्र सैकड़ों मूर्खों से श्रेष्ठ; एक चन्द्रमा अन्धकार मिटाता है, तारों का समूह नहीं (सूक्ति 8)।
(3) **रूपयौवनसम्पन्ना... निर्गन्धा इव किंशुकाः**: विद्याहीन लोग रूप-यौवन होने पर भी गन्धहीन टेसू के फूलों जैसे शोभा नहीं पाते (सूक्ति 2)।

★ **परीक्षा-सुझाव: सूक्तियों का उपयोग:** निबन्ध, भाषण, वाद-विवाद और अनुच्छेद-लेखन में उद्धरण के रूप में। विद्या पर: सूक्ति 2, 11; परिश्रम पर: 5, 6, 7; सज्जन-दुर्जन पर: 3, 4, 12।

CBSE बोर्ड प्रश्नाः 2024–2026, हल सहित

CBSE 2026 · 22 पद्यं पठित्वा प्रश्नान् संस्कृतेन उत्तरत। [5]

अल्पज्ञ एव पुरुषः प्रलपत्यजस्रं, पाण्डित्यसम्भृतमतिस्तु मितप्रभाषी। कांस्यं यथा हि कुरुतेऽतितरां निनादं, तद्वत् सुवर्णमिह नैव करोति नादम्॥

(अ) (i) कीदृशः पुरुषः अजस्रं प्रलपति? (ii) पाण्डित्यसम्भृतमतिः कीदृशः भवति? (iii) सुवर्णं किं न करोति?
(आ) (i) अतितरां निनादं किं करोति? (ii) मितप्रभाषी कः भवति? (iii) अल्पज्ञः पुरुषः किं करोति?
(इ) (i) 'पुरुषः' इति पदस्य विशेषणपदं किम्? (ii) 'बहुभाषी' इति पदस्य विलोमपदं किम्? (iii) 'सुवर्णम्' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किम्?

उत्तर: (अ) (i) **अल्पज्ञः** (ii) **मितप्रभाषी** (iii) **नादम्**
(आ) (i) **कांस्यम् अतितरां निनादं करोति।** (ii) **पाण्डित्यसम्भृतमतिः मितप्रभाषी भवति।** (iii) **अल्पज्ञः पुरुषः अजस्रं प्रलपति।**
(इ) (i) **अल्पज्ञः** (ii) **मितप्रभाषी** (iii) **करोति**

CBSE 2024 · 22 पद्यं पठित्वा उत्तरत। [5]
गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः, बली बलं वेत्ति न वेत्ति निर्बलः। पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः, करी च सिंहस्य बलं न मूषकः॥
(अ) (i) गुणी कं वेत्ति? (ii) पिकः कस्य गुणं जानाति? (iii) निर्बलः कं न वेत्ति?
(आ) (i) सिंहस्य बलं कः न जानाति? (ii) सिंहस्य बलं कः जानाति? (iii) वायसः कस्य गुणं न जानाति?
(इ) (i) 'काकः' इति पदस्य पर्यायपदं किम्? (ii) 'निर्बलः' इति पदस्य विपर्ययपदं किम्? (iii) 'गुणी' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किम्?

> **उत्तर:** (अ) (i) **गुणम्** (ii) **वसन्तस्य** (iii) **बलम्**
> (आ) (i) **मूषकः सिंहस्य बलं न जानाति।** (ii) **करी सिंहस्य बलं जानाति।** (iii) **वायसः वसन्तस्य गुणं न जानाति।**
> (इ) (i) **वायसः** (ii) **बली** (iii) **वेत्ति**

CBSE 2026 · 22 मेलनम्: 'पिको वसन्तस्य गुणं न वायसः' → ? CBSE 2024 'विशेषतः सर्वविदां समाजे' → ? [1 + ½]

> **उत्तर: करी च सिंहस्य बलं न मूषकः। · विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।**

CBSE 2025 · 22 पद्यं पठित्वा उत्तरत। [5]
कर्णामृतं सूक्तिरसं विमुच्य दोषेषु यत्नः सुमहान् खलानाम्। निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य क्रमेलकः कण्टकजालमेव॥
(अ) (i) केषां यत्नः दोषेषु भवति? (ii) सूक्तिरसः कीदृशः? (iii) कः कण्टकजालं निरीक्षते?
(आ) (i) खलानां यत्नः कुत्र भवति? (ii) क्रमेलकः कुत्र प्रविशति? (iii) क्रमेलकः केलिवने किं निरीक्षते?
(इ) (i) 'यत्नः' इत्यस्य विशेषणम्? (ii) 'सज्जनानाम्' इत्यस्य विलोमम्? (iii) 'गुणेषु' इत्यस्य विलोमम्?

> **उत्तर:** (अ) (i) **खलानाम्** (ii) **कर्णामृतम्** (iii) **क्रमेलकः**
> (आ) (i) **कर्णामृतं सूक्तिरसं विमुच्य खलानां यत्नः दोषेषु एव भवति।** (ii) **क्रमेलकः केलिवनं प्रविशति।** (iii) **क्रमेलकः केलिवने कण्टकजालम् एव निरीक्षते।**
> (इ) (i) **सुमहान्** (ii) **खलानाम्** (iii) **दोषेषु**

CBSE 2026 · 22 भावार्थं मञ्जूषापदैः पूरयत (मञ्जूषा: चन्द्रेण, सुपुत्रेण, सज्जनेन): एकेनापि सुपुत्रेण विद्यायुक्तेन साधुना। आह्लादितं कुलं सर्वं यथा चन्द्रेण शर्वरी॥
भावार्थः: एकेन अपि (i) ___ विद्यासहितेन (ii) ___ च सम्पूर्णः वंशः तथैव प्रसन्नः भवति, यथा (iii) ___ रात्रिः प्रसन्ना भवति। [3]

> **उत्तर:** (i) **सुपुत्रेण** (ii) **सज्जनेन** (iii) **चन्द्रेण** (साधुना = सज्जनेन)

CBSE 2026 · 22 शुद्धं भावार्थं चिनुत: 'भोजने चामृतं वारि भोजनान्ते विषप्रदम्।' (i) भोजनस्य मध्ये जलम् अमृततुल्यं तथा भोजनस्य अन्ते विषतुल्यं भवति। (ii) भोजनस्य मध्ये जलं विषतुल्यम्... (iii) भोजनस्य मध्ये अन्ते च जलं विषयुक्तं भवति। [1]

> **उत्तर: (i)**

CBSE 2026 · 22 प्रकृति-प्रत्ययः: शठः सहस्रैरपि शिक्ष्यमाणः। (A) शिक्ष् + शानच् (B) शिक्ष् + मतुप् (C) शिक्ष् + शतृ (D) शिक्ष् + तव्यत् [1]

> **उत्तर: (A) शिक्ष् + शानच्** (कर्मवाच्य 'शिक्ष्यते' से शानच्: 'सिखाया जाता हुआ')

CBSE 2025 प्रसङ्गानुसारम् अर्थः: सर्वस्य लोचनं शास्त्रम्। [½]

> **उत्तर: नेत्रम्**

2025 के प्रश्न अंक-योजना के उत्तरों से पुनर्निर्मित।

बहुविकल्पीयप्रश्नाः: 20 MCQs

1. अपण्डितानां विभूषणं किम्?
   (A) धनम् (B) वस्त्रम् (C) मौनम् (D) रूपम्

2. विद्यावतां वस्तुतः रूपं किम्?
   (A) विद्या (B) सौन्दर्यम् (C) धनम् (D) यशः

3. सुधासमुद्रे निमग्नः अपि कः मार्दवं न उपैति?
   (A) हिमालयः (B) विन्ध्यः (C) मेरुः (D) मन्दरः

4. क्रमेलकः केलिवने किं निरीक्षते?
   (A) पुष्पाणि (B) कण्टकजालम् (C) जलम् (D) फलानि

5. 'क्रमेलकः' अर्थः:
   (A) गजः (B) उष्ट्रः (C) अश्वः (D) वृषभः

6. लक्ष्मीः स्वयं कं याति?
   (A) आलसिनम् (B) कृतघ्नम् (C) दीर्घसूत्रिणम् (D) उत्साहसम्पन्नम्

7. कुलालस्य घटं कर्तुं कियान् कालः?
   (A) वर्षमेकम् (B) दिनम् (C) मासः (D) मुहूर्तः

8. श्रीः कं निषेवते?
   (A) शयानम् (B) धनिनम् (C) कर्माणि आरभमाणम् (D) बलिनम्

9. शर्वरी केन आह्लादिता?
   (A) तारकाभिः (B) सूर्येण (C) दीपेन (D) चन्द्रेण

10. पिकः कस्य गुणं वेत्ति?
    (A) शिशिरस्य (B) वसन्तस्य (C) ग्रीष्मस्य (D) वर्षायाः

11. सिंहस्य बलं कः न वेत्ति?
    (A) करी (B) व्याघ्रः (C) मूषकः (D) सिंहः

12. अजीर्णे वारि किम्?
    (A) भेषजम् (B) अमृतम् (C) बलप्रदम् (D) विषम्

13. सर्वस्य लोचनं किम्?
    (A) धनम् (B) शास्त्रम् (C) नेत्रम् (D) गुरुः

14. कः अजस्रं प्रलपति?
    (A) पण्डितः (B) राजा (C) अल्पज्ञः (D) गुरुः

15. कांस्यं किं करोति?
    (A) मौनम् (B) प्रकाशम् (C) शीतलताम् (D) अतितरां निनादम्

16. 'करी' अर्थः:
    (A) गजः (B) अश्वः (C) सिंहः (D) वानरः

17. 'विमुच्य' प्रत्ययः:
    (A) ल्यप् (B) क्त्वा (C) तुमुन् (D) क्त

18. 'भेत्तुम्' प्रकृतिः:
    (A) भृ (B) भी (C) भज् (D) भिद्

19. 'अपण्डितानाम्' विलोमम्:
    (A) मूर्खाणाम् (B) पण्डितानाम् (C) बालानाम् (D) अज्ञानाम्

20. 'कर्णामृतं सूक्तिरसं विमुच्य...' कस्य कवेः?
    (A) भर्तृहरेः (B) चाणक्यस्य (C) विल्हणस्य (D) विष्णुशर्मणः

1 (C) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (B) · 5 (B) · 6 (D) · 7 (A) · 8 (C) · 9 (D) · 10 (B) · 11 (C) · 12 (A) · 13 (B) · 14 (C) · 15 (D) · 16 (A) · 17 (A) · 18 (D) · 19 (B) · 20 (C)

कथन-कारण (6)

(A) दोनों सही, कारण सही व्याख्या। (B) दोनों सही, कारण सही व्याख्या नहीं। (C) कथन सही, कारण गलत। (D) कथन गलत, कारण सही।

1. कथन: विद्वानों की सभा में मूर्ख का मौन उसका भूषण है। कारण: मौन अज्ञान को ढक लेता है।
2. कथन: विद्वान् कम बोलता है। कारण: सोना काँसे की तरह आवाज़ नहीं करता; ज्ञान गम्भीरता लाता है।
3. कथन: दुष्ट बार-बार सिखाने से सज्जन बन जाता है। कारण: मन्दराचल अमृत-सागर में डूबकर भी कोमल नहीं हुआ।
4. कथन: भोजन के अन्त में जल अमृत है। कारण: भोजन के बीच में जल अमृत है।
5. कथन: लक्ष्मी उत्साही व्यक्ति के पास जाती है। कारण: लक्ष्मी कर्म आरम्भ करने वाले पुरुष की सेवा करती है।
6. कथन: शास्त्र सबका नेत्र है। कारण: ऊँट काँटे ढूँढता है।

उत्तर: 1 (A) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (D) · 5 (A) · 6 (B)

अंतिम-रात सारांश

- 12 सूक्तियाँ; प्राचीन (भर्तृहरि, चाणक्य, विष्णुशर्मा, विल्हण) + अर्वाचीन (मङ्गलदेवशास्त्री, भट्टरामनाथशास्त्री)।
- पद्यांश हर साल यहीं से: 2024 सूक्ति 9 (गुणी गुणं वेत्ति), 2025 सूक्ति 4 (क्रमेलकः), 2026 सूक्ति 12 (अल्पज्ञ एव)।
- उपमा-दृष्टान्त: मन्दर-मार्दव, क्रमेलक-कण्टक, कुलाल-दण्ड, चन्द्र-शर्वरी, पिक-वायस, करी-मूषक, कांस्य-सुवर्ण।
- जल: अजीर्णे भेषजम्, जीर्णे बलप्रदम्, भोजने अमृतम्, भोजनान्ते विषप्रदम् (CBSE पाठ)।
- शास्त्रं सर्वस्य लोचनम्; यस्य नास्ति अन्धः एव सः।

SAMPLE · notesbazar.in